पंचम अध्याय

उपसंहार

पंचम अध्याय

उपसंहार

" श्री उदयशंकर भट्ट कृत :" सागर, लहरें और मनुष्य " उपन्यास का अनुशीलन " लघु शोध प्रबन्ध में उपसंहार नामक पंचम अध्याय में इस लघु-शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय से लेकर पंचम अध्याय तक की सारी बातें संक्षिप्त में बता दी है।

प्रथम अध्याय के अंतर्गत भट्टजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व है। उनके जीवन परिचय में जन्म, व्यक्तित्व, जीवन के अंतरंग और बाहरंग को देखा है। उनके जीवन पहलु है -- दिखावे से दूर, स्वाभिमानी, स्वागतोत्सुक, संवेदनशील एवं भावुक कलाकार, प्रकृति प्रेमी, निर्मल एवं सरल स्वभाव, व्यवस्थाप्रिय, हितैषी, प्रगतीशील - विचारक, यायावरी (Wanderlust), राष्ट्र प्रेमी, सहृदय साहित्यकार, बहिरंग व्यक्तित्व आदि। कृतित्व - भट्टजी ने सब विधाओंपर कलम चलाई है। यह उनके बहुमुखी प्रतिभा की पहचान है। उन्होंने साहित्य जीवन काल में काव्य, नाटक, निबंध, उपन्यास और समालोचना आदि विविध क्षेत्रों को अपनी लेखनी से समृध्द किया है। उनका साहित्य संसार निम्न प्रकार से देख सकते है। काव्य कृति, नाटक, उपन्यास, एकांकी, अन्य स्फुट रचनाएँ आदि।

` सागर, लहरें और मनुष्य ` उपन्यास में आँचलिकता नामक द्वितीय अध्याय के अंतर्गत अंचल शब्द की व्युत्पत्ती और उसका अर्थ बताया है। इसमें प्रथम उत्पत्ती कोशों से परिभाषाओं को लिया है वे कोश है उत्पत्तीकोश, हलायुधकोश, संस्कृत, इंग्लिश डिक्शनरी, आदर्श हिन्दी संस्कृत कोश, आदि। अंग्रेजी कोश है - ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी, द अमेरिकन कॉलेज इनसायक्लोपीडिया आदि। हिन्दी शब्दकोश है - हिन्दी शब्द सागर, मानक हिन्दी कोश,

प्रामाणिक हिन्दी कोश,भाषा शब्द कोश आदि । बाद में विद्वानों की परिभाषाओं का विवेचन है । फिर प्रस्तुत उपन्यास ' सागर,लहरें और मनुष्य ' में बरसोवा अंचल का चित्रण किया गया है । उसके भौगोलिक परिवेश का विवेचन है । जिसमें वहाँ की संस्कृति ,समाज जीवन और उस परिवेश की परिस्थितियों का चित्रण आ गया है । मछुआरों के समस्त जीवन का वर्णन प्रस्तुत उपन्यास में किया गया है । इसमें लेखक अंचल का चित्रण करने में किस तरह सफल हो पाए है यह बताने का प्रयास किया है ।

तृतीय अध्याय ' सागर,लहरें और मनुष्य ' उपन्यास की तत्वों के आधार पर समीक्षा ' का है । जिसमें अंतर्गत उपन्यास के छ तत्व है । कथावस्तु,पात्र या चरित्र चित्रण,कथोपकथन,देशकाल - वातावरण,भाषा-शैली ,शीर्षक,उद्देश्य आदि । तत्वों के आधार पर उपन्यास की समीक्षा करने का प्रयास किया है ।

उपन्यास में चित्रित समस्याएँ नामक चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत बरसोवा अंचल के लोगों के जीवन में स्थित सभी समस्याओं को लिया है । वे समस्याएँ निम्नोक्ति है -- व्यावसायिक,आर्थिक,अवैध यौन सम्बन्ध,जातिवाद,राजनीतिक, शैक्षणिक,सुधार की दिशा आदि ।

पंचम अध्याय उपसंहार का है जिसके अंतर्गत वातावरण,घटनाएं और चरित्रों के पूर्ण विकास के अनन्तर ही कथानक का अन्त होता है । प्रस्तुत उपन्यास के बारे में प्रथम अध्याय से लेकर पंचम अध्याय तक जो बातें इस लघु शोध प्रबन्ध में है उन्हे संक्षिप्त में लिखने का प्रयास किया है ।